Prof. Khushbu Kumari
Guest Teacher
Dept. of Political Science
V.S.J. College, Rajnagar, Madhubani, Inmt

Class - B.A - I (H)
Paper - II

Page No.
Date

Topic – कौटिल्य (सप्तांग सिद्धांत)

Lecture - 1

कौटिल्य ने 'अर्थशास्त्र' के अधिकरण 6, अध्याय 1 तथा अधिकरण 8, अध्याय 2 में राज्य के सात अंगों की चर्चा की है जिन्हें उन्होंने सप्तांग कहा है। 'अर्थशास्त्र' के अनुसार राज्य के सात अंग हैं — स्वामी, अमात्य, जनपद, दुर्ग, कोष, दण्ड तथा मित्र। इन अंगों के वर्णन के दौरान कौटिल्य ने राज्य को "प्रत्यांग भूत" भी कहकर सम्बोधित किया है जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि वे राज्य के आंगिक अथवा जैविक सिद्धान्त में विश्वास रखते हैं। कौटिल्य का मानना है कि राज्य उसी दशा में अच्छा कार्य कर सकता है जब उसके सातों अंग उचित तालमेल के साथ कार्य करें।

(1) स्वामी — स्वामी अर्थात् राजा राज्य का सबसे महत्वपूर्ण अंग है तथा अन्य अंगों का सुचारु रूप से कार्य करना राजा की योग्यता पर निर्भर करता है। वह स्वयं ही राज्य के सभी पदाधिकारियों को चुनता है वह प्रशासनिक निकायों के प्रमुखों को निर्देश देता है वह राज्य के मानवीय तथा भौतिक तत्वों की समस्याओं तथा विपदाओं को दूर करता है तथा उन्हें सुदृढ़ करता है, वह अयोग्य पदाधिकारियों

के स्थान पर गुणी जनों को नियुक्त करना है वह सदा ही योग्य पात्रों को सम्मानित तथा पापियों को दण्ड देने के कार्य में लगा रहता है। कौटिल्य राजा के दैवी-उत्पत्ति के सिद्धान्त को अधिक महत्व नहीं देते हैं राजा सदा ही जन-मन की भाँति जन-कल्याण के कार्यों में लगा रहता है। कौटिल्य के अनुसार राजा को उच्च कुल में उत्पन्न, कृतज्ञ, दृढ़ निश्चयी विचारशील, सत्य वचन बोलने वाला, विवेकशील दूरदर्शी, उत्साही तथा युद्धकला में निपुण होना चाहिए। उसे क्रोध, मोह तथा लोभ से दूर रहना चाहिए।

कौटिल्य ने राजा की शिक्षा पर विशेष बल दिया है। कौटिल्य के अनुसार 'मुंडन संस्कार' के पश्चात राजकुमार को लेखन तथा अंकगणित की शिक्षा प्राप्त होनी चाहिये। उपनयन संस्कार के बाद उसे 'त्रयी' अर्थात तीनों वेदों (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद) तथा आन्विक्षकी अर्थात दर्शनशास्त्र की शिक्षा सुसंस्कृत ज्ञानियों से प्राप्त करनी चाहिये। वार्ता अर्थात अर्थशास्त्र की शिक्षा विभिन्न प्रशासनिक विभागों के प्रमुखों से तथा दण्डनीति का ज्ञान इस विषय के सिद्धान्तों तथा व्यवहारों में प्रवीण व्यक्तियों से प्राप्त करना चाहिये।

Scanned with CamScanner

(2) अमात्य — कौटिल्य के अनुसार शासन कार्य केवल राजपदाधिकारियों के सहयोग से ही सम्भव है। अतः राजा को अपने अमात्यों (मंत्रिगण एवं अन्य पदाधिकारियों) को नियुक्त करना चाहिये तथा उनके दिये गये परामर्शों को मानना चाहिये। अमात्यों के चयन तथा नियुक्ति के सन्दर्भ में कौटिल्य सर्वप्रथम अपने पूर्ववर्ती अर्थशास्त्र के लेखकों के विचारों का उद्धरण देते हैं। उसके बाद वे किसी व्यक्ति की कार्यकुशलता एवं क्षमता के परीक्षण के लिए उसके कार्य-सम्पादन की योग्यता को ही सबसे बड़ा मानदण्ड मानते हुए कार्य की प्रकृति, समय तथा स्थान को ध्यान में रख अमात्यों के चयन की बात करते हैं। अमात्यों में सद्गुण, धैर्य, इच्छाशक्ति के साथ-साथ अपने पद की महत्वपूर्ण तकनीकी जानकारी का होना आवश्यक है।

Khushbu Kumari
21st sept. 2020

Scanned with CamScanner